शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी

Chaar Sansani Khaiz Khwab (Hindi)

चार सन्सनी ख़ैज़ ख़्वाब

तख़्रीज शुदा

- इस्लाह़ का राज़ (फ़र्ज़ी ह़िकायत) 1
- तड़पता मुर्दा 8
- आग का हार 10
- ख़ौफ़नाक शेर 11
- जूते पहनने के 7 मदनी फूल 18
- दूसरी मन्ज़िल से बच्चा गिर पड़ा ! 21
- क़ब्र से बच्चा ज़िन्दा बरआमद हुवा ! 22

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

चार सन्सनी ख़ैज़ ख़्वाब

येह रिसाला **(चार सन्सनी ख़ैज़ ख़्वाब)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. **98987 32611** • Email : **hind.printing92@gmail.com**

﴾786﴿ फ़ेहरिस ﴾92﴿

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
(1) इस्लाह़ का राज़ (फ़र्ज़ी ह़िकायत)	1	सह़ाबी का रोना	14
मुर्दा अगर बता दे तो.....	8	वारिदुहा से मुराद	15
(2) तड़पता मुर्दा	8	पुल सिरात़ पन्दरह[15] हज़ार साल की	
आग का हार	10	राह है	15
ज़ानियों का अन्जाम	10	पुल सिरात़ से गुज़रने का मन्ज़र	16
ज़ानी को शर्मगाह से लटकाया जाएगा	11	हर एक पुल सिरात़ से गुज़रेगा	16
(3) ख़ौफ़नाक शेर	11	मुजरिमीन जहन्नम में गिर पड़ेंगे	17
(4) पुल सिरात़ की दहशत	13	जूते पहनने के 7 मदनी फूल	18
पुल सिरात़ तलवार की धार से		दूसरी मन्ज़िल से बच्चा गिर पड़ा !	21
तेज़ तर है	14	क़ब्र से बच्चा ज़िन्दा बर आमद हुवा !	22

चार मदनी फूल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم इर्शाद फरमाते हैं : "मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की सोह़बत में रहा उन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की कि जब लोगों में जाओ तो इन चार[4] बातों की नसीह़त करना : **(1)** जो **पेट भर** कर खाएगा उसे इ़बादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी **(2)** जो ज़ियादा **सोएगा** उस की उ़म्र में बरकत न होगी **(3)** जो सिर्फ़ **लोगों की ख़ुशनूदी** चाहे वोह रिज़ाए इलाही से मायूस हो जाएगा **(4)** जो **ग़ीबत** और **फ़ुज़ूल गोई** ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।"

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 107)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

चार सन्सनी ख़ैज़ ख़्वाब[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (23 सफ़ह़ात) **मुकम्मल पढ़ लीजिये** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **फ़िक्रे आख़िरत का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की कि (सारे विर्द, वज़ीफ़े, दुआ़एं छोड़ दूंगा और) मैं अपना सारा वक़्त **दुरूद ख़्वानी** में सर्फ़ करूंगा । तो **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी **फ़िक्रों** को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे **गुनाह** मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।" **(ترمذی ج ٤ ص ٢٠٧ حدیث ٢٤٦٥)**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ इस्लाह़ का राज़ (फ़र्ज़ी ह़िकायत)

वलीद को मह़ल्ले की मस्जिद के अन्दर पहली सफ़ में बा जमाअ़त नमाज़ें अदा करते हुए तक़रीबन एक हफ़्ता गुज़र चुका था । अहले

مدینہ

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (26 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1430 हि./2009) में सह़राए मदीना बाबुल मदीना में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक्तबतुल मदीना**

मह़ल्ला ह़ैरान थे कि आख़िर इस में इस क़द्र इन्क़िलाब कैसे आ गया ! दर अस्ल **वलीद** 23 सालह हट्टा कट्टा नौ जवान था इस की विडियो केसिटों की दुकान थी, इस का किरदार बहुत गन्दा था, क्या अहले ख़ाना और क्या अहले मह़ल्ला, सभी इस की शर अंगेज़ियों से बेज़ार थे। इसे मस्जिद में देख कर यूं भी ह़ैरत हो रही थी कि येह जुमुआ़ तो जुमुआ़ ईद की नमाज़ में भी मस्जिद में नज़र नहीं आता था। आख़िर हिम्मत कर के उस के एक पड़ोसी ने इस अ़ज़ीम मदनी इन्क़िलाब पर मुबारक बाद देते हुए उस से उस की **इस्लाह़ का राज़** भी पूछ ही लिया। इस पर उस की आंखों में आंसू आ गए, बरसती हुई आंखों से बताया कि मेरी इस्लाह़ का राज़ **एक सन्सनी ख़ैज़ ख़्वाब** है।

थोड़े दिनों पहले की बात है, रात को ह़स्बे मा'मूल **V.C.R.** पर मारधाड़ से भरपूर एक फ़िल्म देखने के बा'द मैं पलंग पर लैट गया। न जाने क्यूं नींद उचाट हो गई थी ! मारधाड़ के फ़िल्मी मनाज़िर मेरे ज़ेह्न के पर्दे से हटते नहीं थे। बहुत देर तक करवटें बदलने के बा'द जब कुछ ऊंघ आई तो मैं ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गया। ख़्वाब ही ख़्वाब में सख़्त बुख़ार आ गया ह़त्ता कि मुझे अस्पताल में दाख़िल कर दिया गया। इतने में एक निहायत क़द आवर **ख़ौफ़नाक काला आदमी** आया जिस के जिस्म के सारे बाल कांटों की त़रह़ खड़े थे, उस की आंखों, कानों, नाक के नथनों और मुंह से **आग के शो'ले** निकल रहे थे ! आते ही उस ने मुझे अपने फ़ौलादी हाथों से उठा कर फ़ज़ा में उछाल दिया, मैं एक खौलते हुए **तेल की देग** में जा पड़ा और मेरी रूह़ क़ब्ज़ होने का सिल्सिला शुरूअ़ हो गया। इस दौरान मुझे त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतों से गुज़रना पड़ा, कभी

मह़सूस होता कि **तेज़ छुरी** से मेरी खाल उधेड़ी जा रही है तो कभी मेरे जिस्म से **कांटेदार शाख़ें** इन्तिहाई सख़्ती के साथ खींच कर निकालने का अ़मल हो रहा है, कभी ऐसा लगता कि **बहुत बड़ी क़ैंची** से मेरे वुजूद के टुकड़े किये जा रहे हैं, मेरे हर उ़ज़्व बल्कि रूएं रूएं को गोया बांध दिया गया था, न मैं हिल सकता था, न चीख़ सकता था, बहुत देर तक इस दर्दो कर्ब में मुब्तला रहा, बिल आख़िर मेरी रूह़ परवाज़ कर गई ! मेरे घर वालों ने रोना धोना शुरूअ़ कर दिया, शोर मच गया कि वलीद जैसे कड़ियल जवान का यकायक इन्तिक़ाल हो गया ! मेरे ग़ुस्ल व कफ़न और नमाज़े जनाज़ा के मराह़िल तै हुए और मुझे **तारीक क़ब्र** में उतार दिया गया। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐसा **घुप अंधेरा** इस से पहले कभी न देखा था। लोग दफ़्ना कर चल पड़े और मैं उन के क़दमों की चाप सुनता रहा। इतने में क़ब्र की दीवारें हिलना शुरूअ़ हो गईं, लम्बे लम्बे दांतों से क़ब्र की दीवार चीरते हुए ख़ौफ़नाक शक्लों वाले दो फ़िरिश्ते (मुन्कर नकीर) मेरी क़ब्र में आ पहुंचे, उन का रंग सियाह, आंखें काली और नीली और शो'ला ज़न थीं, उन के काले काले मुहीब (या'नी हैबत नाक) बाल सर से पाउं तक लटक रहे थे, उन्हों ने मुझे झन्झोड़ा और झिड़क कर उठा दिया और निहायत ही सख़्त लहजे में **सुवालात** शुरूअ़ कर दिये। हाए ! मेरी बद नसीबी ! ! इतने में एक आवाज़ गूंज उठी : **"इस बे नमाज़ी को कुचल दो !"** बस फिर क्या था क़ब्र की दीवारों ने मुझे भींचना शुरूअ़ कर दिया और मेरी पस्लियां चटाख़ चटाख़ की आवाज़ के साथ टूटने और एक दूसरे में पैवस्त होने लगीं, मेरा कफ़न **आग** के कफ़न से बदल गया, मेरे

नीचे **आग का बिस्तर** बिछ गया। इतने में क़ब्र में मेरी ख़ालाज़ाद बहन आ गई, क़रीब ही एक बे रीश लड़का भी खड़ा था, यक लख़्त उन दोनों की शक्लें बेहद डरावनी हो गईं और उन के हाथों में देव हैकल **ड्रिल मशीनें** कपकपाने और उन की सलाख़ों (**RODS**) से आग की चिंगारियां उड़ने लगीं। एक गरजदार आवाज़ गूंज उठी.....''**वलीद** अपनी ख़ालाज़ाद बहन से बे तकल्लुफ़ था[1] और उस से अपनी निगाह की हिफ़ाज़त नहीं करता था, बे रीश ख़ूब सूरत लड़कों में दिल चस्पी लेता था। लज़्ज़त के साथ उन को देखता और लज़्ज़त ही के साथ उन से मुलाक़ात करता था। ख़ुद भी फ़िल्में डिरामे देखता और दूसरों को भी दिखाता था, **इसे बद निगाही और शहवत परस्ती का मज़ा चखा दो !**''

बस फिर क्या था उन दोनों ने ड्रिल मशीन की **आतशीं सलाख़ें** मेरी आंखों में घोंप दीं जो करख़्त आवाज़ के साथ घूमती हुई **आंखों को फोड़ती** हुई गुद्दी से आर पार हो गईं, साथ ही साथ मेरे हाथों और जिस्म के उन हिस्सों पर भी ड्रिल मशीनें चलने लगीं जिन से मैं शहवत को तस्कीन दिया करता था। इस क़दर **ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब** के बा वुजूद न मुझ पर बेहोशी त़ारी होती थी न ही नज़र आना बन्द होता था। येही अ़ज़ाब क्या कम था कि फिर आवाज़ आई : ''येह गाने बाजे सुनने का शौक़ीन था, जब कभी दो आदमी ख़ुफ़्या बात करने की कोशिश करते तो येह कान लगाकर उन की बातें सुन लिया करता था।'' जूं ही आवाज़ बन्द

مدینہ

1 : दीगर ना मह़रम औ़रतों के साथ साथ ख़ालाज़ाद, चचाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफीज़ाद, तायाज़ाद, साली और भाभी से भी मर्द का पर्दा है। इसी त़रह़ ग़ैर मर्दों के इलावा ख़ालू, फूफा, बहनोई, देवर व जेठ से भी औ़रत का पर्दा है।

हुई, ड्रिल मशीनों ने मेरे कानों का रुख़ किया और आह ! अब मेरे कानों में भी सलाखें ज़ोर ज़ोर से घूमने लगीं। काफ़ी देर तक **येह अज़िय्यत नाक अ़ज़ाब** होता रहा कि आवाज़ गूंज उठी : "येह मां बाप को सताता था..... मुसल्मानों के दिल दुखाता था..... झूटा था वा'दा न निभाता था..... जब गुस्सा आता तो गाली गलोच और मारधाड़ पर उतर आता था..... लोगों पर त़न्ज़ करना, उन का मज़ाक़ उड़ाना, इधर की उधर लगाना, लोगों के ऐ़ब उछालना, ताश, शत़रन्ज, लूडो और विडियो गेम्ज़ खेलना, नशा करना और पतंग उड़ाना येह सब इस के मह़बूब मश्ग़ले थे। लोगों का ह़क़ दबाना, ना जाइज़ कमाना और ह़राम खाना इस का वतीरा था..... येह **दाढ़ी भी मुंडाता था**..... इस के अ़ज़ाब में इज़ाफ़ा कर दो !" चुनान्चे देखते ही देखते बहुत सारे लम्बे लम्बे **काले बिच्छू** डंक उठाए मेरी त़रफ़ लपके और मेरी ठोड़ी कि खाल के अन्दर घुसने शुरूअ़ हो गए और जहां दाढ़ी होती है उस ह़िस्से में खाल और गोश्त के दरमियान दाख़िल हो कर मुझे डंक मारने लगे। **ख़ौफ़नाक सियाह सांपों** ने मुझे भंभोड़ना (काटना) शुरूअ़ कर दिया, मैं दुन्या में जिन जिन चीज़ों से डरता था वोह सब (मसलन कुत्ते, कनखजूरे, छिपकलियां, चूहे वग़ैरा) यक्बारगी मुझ पर टूट पड़े, नीज़ मेरी **क़ब्र आग की भट्ठी बन गई**। इतने में किसी ने बहुत बड़े **आतशीं हथोड़े** से मुझे एक ज़ोरदार ज़र्ब लगाई और मैं गेंद की त़रह़ उछला, धड़ाम से गिरा और **मेरी आंख खुल गई !** मैं अपने पलंग से नीचे गिर पड़ा था, घर वाले घबरा कर जाग उठे थे, दहशत के मारे मेरा बदन बुरी त़रह़ कांप रहा था।

जब ह़वास कुछ बह़ाल हुए तो **मैं ने रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की,** मां बाप और दीगर अफ़्रादे ख़ाना को राज़ी किया, रातों रात इ़शा की नमाज़ अदा की और मैं ने पांचों वक़्त तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम शुरूअ़ कर दिया है नमाज़े क़ज़ा उ़म्री भी अदा कर रहा हूं और एक मुठ्ठी दाढ़ी सजाने का भी अ़हद कर लिया है। विडियो का कारोबार ख़त्म कर दिया है, जिन लोगों के हुक़ूक़ पामाल किये थे, उन से सुल्ह़ कर ली है। जिन की रक़में ज़िम्मे थीं, अदा कर दी हैं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं एक अच्छे मुसल्मान की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारूंगा। मेरी **इस्लाह़ का राज़** जिस जिस बे अ़मल मुसल्मान पर आशकार हो, काश ! उस के लिये भी वोह बाइ़से इस्लाह़ बन जाए।

कूच हां ऐ बे ख़बर होने को है — कब तलक ग़फ़्लत सह़र होने को है
बांध ले तोशा सफ़र होने को है — ख़त्म हर फ़र्दे बशर होने को है

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुनदरजए बाला दिल हिला देने वाली तसव्वुराती ह़िकायत पर ठन्डे दिल से ग़ौर कर के हम सब को इस में से **इ़ब्रत के मदनी फूल** चुनने चाहियें। इस से नसीह़त ह़ासिल करने का एक त़रीक़ा येह भी है कि तसव्वुर ही तसव्वुर में इस वाक़िए़ को अपने ऊपर गुज़रता हुवा मह़सूस करें और फिर अपने आप को ख़ूब डराएं कि देखो एक बार और मोहलत दे दी गई है, अब गुनाहों भरी ज़िन्दगी से कनारा कशी कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारनी है। वरना वाक़ेई जब

मौत की सख़्तियां शुरूअ़ हो जाएंगी उस वक़्त अपनी एक न चलेगी। आह ! नज़्अ़ की सख़्तियां बरदाश्त नहीं हो सकेंगी, नज़्अ़ के मुतअ़ल्लिक़ एक **होशरुबा रिवायत** पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़िये।

मुर्दा अगर बता दे तो.....

मौत दुन्या व आख़िरत की होलनाकियों में सब से ज़ियादा होलनाक है येह **आरों** के चीरने से, **क़ैंचियों** के कतरने से और **हांडियों** के उबालने से भी ज़ियादा तक्लीफ़ देह है। अगर मुर्दा ज़िन्दा हो कर **मौत की सख़्तियां** लोगों को बता दे तो इन का ऐशो आराम सब ख़त्म हो जाए और इन की नींद उड़ जाए।

(शर्हुस्सुदूर, स. 33, मर्कज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा अल हिन्द)

है यहां से तुझ को जाना एक दिन क़ब्र में होगा ठिकाना एक दिन
मुंह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन अब न ग़फ़्लत में गंवाना एक दिन
एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

﴾2﴿ तड़पता मुर्दा

एक डॉक्टर का बयान है : एक रात मैं ने एक **सन्सनी ख़ैज़ ख़्वाब** देखा, ख़्वाब ही ख़्वाब में मैं एक क़ब्र के अन्दर दाख़िल हुवा, उस में मुझे **तड़पता मुर्दा** नज़र आया, चीख़ने के अन्दाज़ में मुंह खोलने के बा वुजूद उस के मुंह से आवाज़ नहीं निकलती थी ! काफ़ी देर के बा'द वोह साकिन हुवा (या'नी तड़पना बन्द हो गया)। इतने में एक शख़्स ने

चाबुक नुमा चमकदार तार उस की पेशाब की नाली के सूराख़ में दाख़िल कर दी ! जिस की अज़िय्यत से वोह मुर्दा एक बार फिर पहले की त़रह़ तड़पने लगा। मुर्दे की इस अज़िय्यत नाक ह़ालत पर मुझ से न रहा गया और मैं ने अ़ज़ाब देने वाले से पूछा : इस मुर्दे को येह **दर्दनाक अ़ज़ाब** क्यूं दिया जा रहा है ? उस ने बताया : "येह अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में **ज़ानी** था। अब जब से मरा है, इसे येही अ़ज़ाब दिया जा रहा है।" मुझे उस मुर्दे की ह़ालत पर बहुत रह़्म आ रहा था, इतने में किसी ने मुझे पकड़ कर ज़मीन पर लिटा दिया और वैसी ही बारीक सलाख़ मेरी पेशाब गाह के सूराख़ में भी दाख़िल कर दी ! मैं शदीद तक्लीफ़ की वज्ह से माहिये बे आब की त़रह़ तड़पने लगा, काफ़ी देर के बा'द जब मेरी आंख खुली तो मैं सख़्त तक्लीफ़ में था मेरा बिस्तर गीला था मुझे मह़सूस हुवा कि पेशाब निकल गया है। मगर देखा तो बिस्तर तकिये तक पसीने में तर बतर था ! मैं ने जब उठ कर पेशाब किया तो **ख़ून** की त़रह़ सुर्ख़ था और **येह ख़ून वाला पेशाब छे[6] माह तक जारी रहा,** इस से मैं बहुत कमज़ोर हो गया, हर क़िस्म के लेबोरेटरी टेस्ट, गुर्दे मसाने के **X-RAY** वग़ैरा करवाए, कई डॉक्टरों से मश्वरा किया मगर न बीमारी की वज्ह सामने आई न ही मरज़ में कमी हुई। इस दौरान मैं ने मुलाज़मत से लम्बी छुट्टी ले ली। जब हर त़रह़ की दवा नाकाम हो गई तो फिर मैं ने **दुआ़ व इस्तिग़फ़ार** की त़रफ़ रुजूअ़ किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इस मुसीबत से नजात बख़्शी। आज भी जब वोह **तड़पता लाशा** याद आता है तो ख़ौफ़ के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

आग का हार

मज़्कूरा वाक़िआ़ कहीं पढ़ा था जिसे क़दरे तसर्रुफ़ के साथ बयान किया है वाक़ेई इस में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठिये ! ज़िना और उस के लवाज़िमात या'नी आंखों का ज़िना, हाथों का ज़िना, दिल का ज़िना, ज़ेह्न का ज़िना और हर त़रह़ के ज़िना से सच्ची तौबा कर लीजिये।

मन्क़ूल है : जिस ने अपनी आंखों को नज़रे ह़राम से पुर किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की आंखों को जहन्नम की आग से पुर करेगा और जिस ने ह़राम कर्दा औ़रत से ज़िना किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस की क़ब्र से प्यासा, रोता हुवा ग़मगीन और सियाह रू (या'नी काले चेहरे वाला) उठाएगा और उसे तारीकी (या'नी अंधेरे) में खड़ा करेगा। उस की गरदन में **आग का हार** होगा और उस के जिस्म पर क़ित़रान (या'नी रांगे) का लिबास होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ न उस से कलाम फ़रमाएगा और न ही उसे पाक करेगा और उस के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। (قرۃُ العیون مع روض الفائق ص ۳۸۸)

ज़ानियों का अन्जाम

मे'राज की रात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तन्नूर जैसे एक सूराख़ के पास पहुंचे तो उस के अन्दर झांक कर देखा, तो उस में कुछ नंगे मर्द और औ़रतें थीं अचानक उन के नीचे से आग का शो'ला उठता तो मर्द और औ़रतें दहाड़ें मारते और हाए हाए करते। **सरकारे आ़लम मदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार पर सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : येह ज़ानी मर्द और

ज़ानिया औ़रतें हैं। (مسند امام احمد بن حنبل ج ۷ ص ۲۴۹ حدیث ۲۰۱۱۵ دار الفکر بیروت)

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब मर्द मर्द से ह़राम कारी करे तो वोह दोनों[2] ज़ानी हैं और जब औ़रत औ़रत से ह़राम कारी करे तो वोह दोनों[2] ज़ानी हैं।

(اَلسُّنَنُ الْكُبرٰى ج ۸ ص ۴۰۶ حدیث ۱۷۰۳۳ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

ज़ानी को शर्मगाह से लटकाया जाएगा

मरवी हुवा कि ज़बूर शरीफ़ में है : ज़ानियों को उन की शर्मगाहों के ज़रीए़ जहन्नम में लटकाया जाएगा और लोहे के कोड़ों से मारा जाएगा। जब कोई ज़ानी इस सज़ा से बचने के लिये मदद त़लब करेगा तो फ़िरिश्ते कहेंगे तेरी येह आवाज़ उस वक़्त कहां थी जब तू हंसता था, ख़ुश होता और अकड़ता था। न **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़मत को देखता और न ही उस से ह़या करता था। (کتاب الکبائر ص ۵۵)

﴾3﴿ ख़ौफ़नाक शेर

एक शख़्स ने ख़्वाब देखा, कि वोह किसी **जंगल** में चला जा रहा है इतने में पीछे आहट मह़सूस हुई मुड़ कर देखा तो एक **ख़ौफ़नाक** शेर उस के तआ़कुब में चला आ रहा है, वोह घबरा कर भाग खड़ा हुवा, **शेर** भी पीछे दौड़ा, इतने में एक **गहरा गढ़ा** आड़े आ गया, उस ने गढ़े में झांक कर देखा तो अन्दर एक **बहुत बड़ा सांप** मुंह खोले बैठा नज़र आया ! अब येह बहुत डरा कि करे तो क्या करे ! आगे **ख़त़रनाक सांप** है तो पीछे **ख़ौफ़नाक शेर !** इतने में उसे एक दरख़्त नज़र आया, येह उस की टहनी से लटक गया लेकिन एक नई मुसीबत खड़ी हो गई, वोह येह कि **एक**

सफ़ेद और एक सियाह चूहा दोनों[2] मिल कर उस टहनी की जड़ को कतर रहे हैं, अब तो येह बहुत घबराया कि अ़न्क़रीब येह दोनों[2] चूहे टहनी काट डालेंगे और मैं गिर जाऊंगा और फिर **शेर** और **सांप** का लुक़्मा बन जाऊंगा। अभी वोह इसी तरद्दुद में था कि उस की नज़र **शहद के छत्ते** पर पड़ी और वोह शहद पीने में मश्ग़ूल हो गया और शहद की लज़्ज़त में कुछ ऐसा गुम हुवा कि न शेर व सांप का ख़ौफ़ रहा, न ही दोनों[2] चूहों का डर। अचानक टहनी जड़ से कट गई और येह धड़ाम से नीचे गिरा, **शेर** उस पर झपटा और उस ने चीर फाड़ कर गढ़े में गिरा दिया और **सांप** उस को निगल गया। फिर आंख खुल गई।

वोह है ऐशो इ़श्रत का कोई मह़ल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह्ल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़त में दुन्या की लज़्ज़तें ख़्वाब की त़रह़ हैं जो इस की रंगीनियों में खोया हुवा है वोह यक़ीनन ग़फ़्लत की नींद सोया हुवा है, मौत आने पर वोह जाग उठेगा। मज़्कूरा बाला ख़्वाब में जंगल से मुराद दुन्या है और **ख़ौफ़नाक शेर** मौत है, जो पीछे लगी हुई है, गढ़ा क़ब्र है जो आगे है, वोह सांप बुरे आ'माल हैं जो क़ब्र में डसेंगे और दो[2] **सफ़ेद व सियाह चूहे** दिन और रात हैं और वोह टहनी ज़िन्दगी है, जिसे वोह काट रहे हैं और शहद का छत्ता दुन्या की फ़ानी लज़्ज़ात हैं, जिन में मश्ग़ूल हो कर इन्सान **शेर** (या'नी मौत), **गढ़ा** (या'नी

क़ब्र), **सांप** (या'नी सज़ाए आ'माले बद) और **सियाह व सफ़ेद चूहों** (या'नी दिन और रात) को भूल जाता है मगर वोह दोनों[2] चूहे (या'नी दिन और रात) मिल कर उस की ज़िन्दगी की टहनी को बराबर कतरते रहते हैं, जूं ही उस की मुद्दत पूरी होती है, वोह मौत का शिकार हो जाता है।

हुस्ने ज़ाहिर पर अगर तू जाएगा आ़लमे फ़ानी से धोका खाएगा
येह मुनक़्क़श सांप है डस जाएगा रह न ग़ाफ़िल याद रख पछताएगा
एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

﴾4﴿ पुल सिरात़ की दहशत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की एक कनीज़ ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मैं ने ख़्वाब में देखा कि जहन्नम को दहकाया गया है और उस पर **पुल सिरात़** रख दिया गया है। इतने में **उमवी ख़ुलफ़ा** को लाया गया। सब से पहले ख़लीफ़ा **अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान** को हुक्म हुवा कि **पुल सिरात़** से गुज़रो, वोह **पुल सिरात़** पर चढ़ा, मगर आह ! देखते ही देखते दोज़ख़ में गिर पड़ा। फिर उस के बेटे **वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक** को लाया गया, वोह भी दोज़ख़ में जा गिरा। इस के बा'द **सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक** को ह़ाज़िर किया गया और वोह भी इसी त़रह़ दोज़ख़ में गिर गया। इन सब के बा'द या अमीरल मुअमिनीन ! आप को लाया गया, बस इतना सुनना था कि **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ौफ़ज़दा हो कर चीख़ मारी और गिर पड़े। कनीज़ ने पुकार कर कहा : या अमीरल

मुअमिनीन ! सुनिये भी तो..... ख़ुदा की क़सम ! मैं ने देखा कि आप ने सलामती के साथ **पुल सिरात़** को उ़बूर कर लिया। मगर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه **पुल सिरात़ की दहशत** से बेहोश हो चुके थे और इसी आ़लम में इधर उधर हाथ पाउं मार रहे थे।

(اِحْیاءُ الْعُلُوم ج ۴ ص ۲۳۱ دارصادر بیروت)

पुल सिरात़ तलवार की धार से तेज़ तर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ालां कि ग़ैरे नबी का ख़्वाब शरीअ़त में **हुज्जत** नहीं। फिर भी आप ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه **पुल सिरात़** पर गुज़रने के मुआ़मले में किस क़दर ह़स्सास थे। वाक़ेई **पुल सिरात़** का मुआ़मला बड़ा ही नाज़ुक है। पुल सिरात़ बाल से बारीक और तलवार की धार से तेज़ तर है और येह जहन्नम की पुश्त पर रखा हुवा होगा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सख़्त तशवीशनाक मरह़ला है, हर एक को उस पर से गुज़रना ही पड़ेगा।

सह़ाबी का रोना

पुल सिरात़ का मरह़ला आसान नहीं, हमारे अस्लाफ़ इस ज़िम्न में बेह़द मुतफ़क्किर और मग़मूम रहा करते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को एक बार रोते देख कर उन की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : आप को

किस बात ने रुलाया ? फ़रमाया : मुझे (पारह 16 सूरए मरयम में वारिद शुदा) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान याद आ गया, وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो) येह तो जान लिया कि मैं ने उस में दाख़िल होना है लेकिन येह नहीं जानता कि मैं उस से नजात भी ह़ासिल कर सकूंगा या नहीं।

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحاکِم ج ۴ ص ۶۳۱ حدیث ۸۷۴۸، اَلتَّخویف مِنَ النَّار ص ۲۴۹)

वारिदुहा से मुराद

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ मरह़बा ! **सूरए मरयम** की आयत नम्बर 71 में लफ़्ज़, ''वारिदुहा'' (या'नी दोज़ख़ से गुज़रने के बारे में) ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا और सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वग़ैरा के ख़याल में बात येह थी कि क़ुरआने करीम के इन अल्फ़ाज़ में ''वारिदुहा'' के मा'ना **دَاخِلُهَا** (या'नी दोज़ख़ में दाख़िल होने) के हैं।''

(مرقاۃ المفاتیح ج ۱۰ ص ۵۹۹ تحت الحدیث ۶۲۲۷، اَلتَّخویف مِنَ النَّار ص ۲۴۹، البدور السّافرۃ ص ۳۳۸)

पुल सिरात़ पन्दरह हज़ार साल की राह है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़्म फ़रमाए, **पुल सिरात़** का सफ़र निहायत ही त़वील है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है : **पुल सिरात़** का सफ़र पन्दरह[15] हज़ार साल की राह है, पांच हज़ार साल ऊपर चढ़ने के, पांच[5] हज़ार साल नीचे उतरने के और पांच हज़ार साल बराबर के। **पुल सिरात़**

बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से तेज़ तर है और वोह जहन्नम की पुश्त पर बना हुवा है उस पर से वोह गुज़र सकेगा जो **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के बाइस कमज़ोर व निढाल होगा। (البدورالسّافرة ص ۳۴۴ دارالکتب العلمیه بیروت)

पुल सिरात़ से गुज़रने का मन्ज़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तसव्वुर कीजिये ! उस वक़्त क्या गुज़र रही होगी जब मैदाने क़ियामत में सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, भेजे खौल रहे होंगे, कलेजे फट गए होंगे दिल उबल कर गले में आ गए होंगे ऐसे दर्दनाक ह़ालात में **पुल सिरात़** से गुज़रने का मरह़ला दरपेश होगा। इस से गुज़रने के लिये दुन्यवी त़ाक़तवर व बॉक्सर, कड़ियल नौ जवान व पहलवान, तेज़ व त़र्रार व सुबुक रफ़्तार, ख़लाबाज़ व कराटे बाज़, और हट्टे कट्टे मुस्टन्डे होने की ह़ाजत नहीं बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान के मुत़ाबिक़ **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के सबब कमज़ोर व ज़ार और नह़ीफ़ व नज़ार रहने वाले **पुल सिरात़** को ब आसानी पार कर लेंगे।

हर एक पुल सिरात़ से गुज़रेगा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे उम्मीद है कि जो ग़ज़्वए बद्र और हुदैबिया में ह़ाज़िर थे वोह आग में दाख़िल नहीं होंगे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या**

रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या **अल्लाह** तआ़ला ने येह नहीं फ़रमाया :

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۚ﴿۷۱﴾

(پارہ ۱۶ سورۂ مریم ۷۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो तुम्हारे रब के ज़िम्मे पर येह ज़रूर ठहरी हुई बात है।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क्या तूने नहीं सुना :

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿۷۲﴾

(پارہ ۱۶ سورۂ مریم ۷۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे।

(سُنَن ابنِ ماجه ج ۴ ص ۵۰۸ حدیث ۴۲۸۱ دارالمعرفة بیروت)

मुजरिमीन जहन्नम में गिर पड़ेंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि हर एक को दोज़ख़ से गुज़रना होगा। **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ रखने वाले मुअमिनीन बचा लिये जाएंगे और मुजरिमीन व ज़ालिमीन जहन्नम में गिर पड़ेंगे। आह! आह! आह! इन्तिहाई दुश्वार मुआ़मला है, हाए! हाए! फिर भी हम ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार नहीं होते।

दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता मग़्लूब शहा नफ़्से बदकार नहीं होता
येह सांस की माला अब बस टूटने वाली है ग़फ़्लत से मगर दिल क्यूं बेदार नहीं होता
गो लाख करूं कोशिश इस्लाह नहीं होती पाकीज़ा गुनाहों से किरदार नहीं होता

ऐ रब के ह़बीब आओ ऐ मेरे त़बीब आओ

अच्छा येह गुनाहों का बीमार नहीं होता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द **सुन्नतें और आदाब** बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح، ج۱ ص۵۵ حديث ۱۷۵ دارالكتب العلمية بيروت)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"चल मदीना" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 मदनी फूल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **(1)** जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है। (या'नी कम थकता है) (مسلم ص۱۱۶۱ حديث۲۰۹۶) **(2)** जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए **(3)** पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (या'नी सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (या'नी उलटी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (या'नी सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। **(بخاری ج ٤ ص ٦٥ حدیث ٥٨٥٥)**

नुज़्हतुल क़ारी में है : मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त हुक्म येह है पहले सीधा पाउं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले तो पहले उलटा पाउं निकाले। मस्जिद के दाख़िले के वक़्त इस ह़दीस पर अ़मल दुश्वार है। **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने इस का ह़ल येह इर्शाद फ़रमाया है : जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उलटे पाउं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधे पाउं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाख़िल हो। और जब मस्जिद से बाहर हो तो उलटा पाउं निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधा पाउं निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये फिर उलटा पहन लीजिये। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 5, स. 530, फ़रीद बुक स्टॉल) **(4)** मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे **(5)** किसी ने **ह़ज़रते** सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जुते पहनती है। उन्हों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है। **(ابو داود ج ٤ ص ٨٤ حدیث ٤٠٩٩)** **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते

हैं : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता है इन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 65, मक्तबतुल मदीना) **(6)** जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं **(6)** (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना "दौलते बे ज़वाल" में लिखा है कि अगर रात भर जूता औंधा पड़ा रहा तो शैत़ान उस पर आन बैठता है वोह उस का तख़्त है। (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर, ह़िस्सा : 5, स. 596) इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये। **त़रह़** त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ दो कुतुब "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 16 (304 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरी मन्ज़िल से बच्चा गिर पड़ा !

तरग़ीब व तह़रीस के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक अनोखी मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे बाबुल मदीना के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मुह़र्रमुल ह़राम सि. 1425 हि. में मेरे भान्जे के अब्बू **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ 12 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर थे। इसी दौरान उन का दो सालह **मदनी मुन्ना** इ़मारत की दूसरी मन्ज़िल से गिर पड़ा। मह़ल्ले वाले घबरा कर दौड़ पड़े कि इतनी बुलन्दी पर से गिरने वाला बच्चा कहां ज़िन्दा बचेगा। मगर लोगों की ह़ैरत की उस वक़्त इन्तिहा न रही जब देखा कि वोह मदनी मुन्ना रोता हुवा सह़ीह़ सलामत खड़ा हो गया है ! जब **मदनी मुन्ने** के अब्बु **मदनी क़ाफ़िले** से लौट कर घर आए और अपने **मदनी मुन्ने** को बिल्कुल ठीक ठाक पाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया। उन का येह ज़ेह्न बना कि येह सब **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत है जो ऐसा ज़िन्दा करिश्मा देखने को मिला। चुनान्चे उन्हों ने उसी वक़्त येह निय्यत की, कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ 12 माह में 12 दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा।

रब ह़िफ़ाज़त करे और किफ़ायत करे — गा तवक्कुल करें क़ाफ़िले में चलो
ह़ादिसा हो कोई आ़रिज़ा हो कोई — सब सलामत रहें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िरों की तो क्या बात है ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें किसी को तन्हा नहीं छोड़तीं। **अल्लाहु करीम** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत बहुत ही अ़ज़ीम है। दूसरी[2] मन्ज़िल से गिरने वाले बच्चे का यूं सलामत रह जाना यक़ीनन करिश्मए क़ुदरत है। आइये इस से भी ज़ियादा ह़ैरत अंगेज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

क़ब्र से बच्चा ज़िन्दा बर आमद हुवा !

एक शख़्स अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमते बा बरकत में अपने बेटे के साथ आया। बेटे की सूरत हू ब हू अपने वालिद से मिलती थी। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन को देख कर फ़रमाया कि मैं ने इन बाप बेटों के दरमियान जितनी मुशाबहत देखी इस से पहले कभी किसी और में नहीं देखी। वालिद ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! इस बच्चे का वाक़िआ़ निहायत ही अ़जीबो ग़रीब है। मैं सफ़र पर जाने लगा तो येह बच्चा मां के पेट में था, बीवी ने कहा : तुम इस को किस के सिपुर्द कर के जा रहे हो ? मैं ने कहा : **"मैं ने इस को अल्लाह तआ़ला** عَزَّوَجَلَّ **के सिपुर्द किया।"** जब सफ़र से लौट कर आया तो घर को मुक़फ़्फ़ल (बन्द) पाया। जब मा'लूमात कीं तो पता चला कि बीवी का इन्तिक़ाल हो चुका है, मैं फ़ातिह़ा पढ़ने उस की क़ब्र पर गया तो एक **रोशन शो'ला** उस की क़ब्र पर देखा।

मैं ने सोचा बीवी तो नेक थी येह शो'ला कैसा ? मैं ज़रूर खोद कर देखूंगा। **जब क़ब्र खोदी तो क्या देखता हूं कि उस में चांद सा मदनी मुन्ना मौजूद है जो मरी हुई मां के इर्द गिर्द उछल कूद कर खेल रहा है !** ग़ैब से आवाज़ आई : "येह वोह बच्चा है जिस को तूने सफ़र पर जाते वक़्त हमारे सिपुर्द किया था, ले अमानत संभाल, अगर बीवी को भी हमारे सिपुर्द कर जाता तो वोह भी तुझ को मिल जाती।" (فُتُوحاتُ الرَّبّانِيّه)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमे'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी इन्आमात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

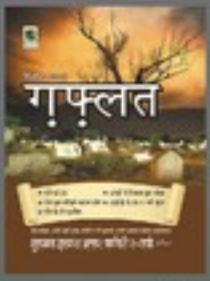

M.R.P. ₹ -/00

01013086

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net